Vol III Issue IX March 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

गुप्तकालिन समाज में महिलाओं की सामाजिक– आर्थिक अवस्था : एक अध्ययन

सदानन्द पाण्डेय

एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी.,
प्रवक्ता (परियोजना+2 बालिका उच्च विद्यालय, करण्डे, शेखपुरा, बिहार)

सारांश :-गौरवशाली एवं उन्नत प्राचीन भारतीय संस्कृति को भुला आज का मानव, आधुनिक होने का दम्भ भरता है। प्राचीनशब्द सुनते ही मस्तिष्क में रूढ़िवादिता, आडम्बर, निरवरता, सामाजिक बन्धनों की जकड़न व घुटन का अहसास होने लगता है। परन्तु यदि प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी की उन्नत स्थिति उनकी विद्वता, उच्चशिक्षा, कर्तव्य, शालीनता के साथ भ्रष्ट कार्यों का विषद् वर्णन मिलता है। गुप्तकालीन साहित्य में नारी की स्थिति का आदर्शमय चित्रण है, और उसकी पराधीनता और परतन्त्रता का भी पता चलता है। जिससे हमें गुप्त कालिन समाज में नारियों की स्थिति का वास्तविक ज्ञान होता है।

महत्वपूर्ण शब्द : अंक, अधिवन्दन, अवगुठंन, नियोग, पुनंर्भू

प्रस्तावना :

प्राचीन काल से भारतीय समाज में नारी का सम्मान और आदर होता चला आ रहा है। नारी समाज की आधारशिला है। पुरूष के व्यक्तित्व का अंकुरण माता के अंक में ही है। धर्मशास्त्रों में नारी सर्वशक्ति सम्पन्न मानी गयी है तथा ममता यश और सम्पत्ति की प्रतीक समझी गयी है।

गुप्तकालीन साहित्य व कला में नारी का आदर्शमय चित्रण है परन्तु व्यावहारिक रूप में उनकी स्थिति वैदिक काल की अपेक्षा दयनीय हो गयी थी। महाभारत में पत्नी के बिना जीवनशून्य माना गया है। इसमें भार्या को समस्त रोगों और दुखों का निदान माना गया है। रद्युवंश में अज ने अपनी प्रिया को सखी, सचिव तथा प्रिय शिष्या कहा है। स्वप्नवासवदत्ता में उदयन वासवदत्ता को प्रिये तथा प्रिय शिष्ये कहता है। पत्नी पुरुष की सह धर्मिणी मानी जाती थी।

नारियों की मर्यादा को लेकर इस काल में कुछ बाते ऐसी विकसित हुई जो उसके शिक्षा अधिकार, धार्मिक, विवाह पर्दा प्रथा इत्यादि के रूप में देखी जा सकती है।

1.गुप्तकालिन समाज में महिलाओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करना।
2.वर्त्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता की चर्चा।

अध्ययन का उद्देश्य:–

नारी शिक्षा गुप्तकालीन साहिॅत्यक स्त्रोतों से हमें उस समय के नारी शिक्षा की जानकारी मिलती है। अधिकांशतः उच्च वर्ग की नारियों की शिक्षा के लिए समुचित व्यवस्था की गयी थी। नारियाँ कवयित्री होती थी। नारी शिक्षा के दो रूप थे आध्यात्मिक और व्यावहारिक। उदारहण स्वरूप – संनति, शतक्ष्पा आदि आध्यात्मिक ज्ञान में निपुण थी। उमा, पीवरी धर्मव्रता आदि ने तम के द्वारा मनोनूकुल वर पाया।

एतेश पीवरी कन्या मनसी दिविविश्रुता।
योगगनी योगमाता चतपश्य के सुदारूणम।।   मत्स्य पुराण 15/5/6

कन्याओं को इन शिक्षाओं के अतिरिक्त गृहकार्य, पशुओं की देखभाल तथा ललित कलाओं, नृत्य–संगीत, चित्रकला आदि की

व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती थी। चित्र लेखा एक अत्यंत कुशल चित्रकार थी जिसने अनेकों देव, गन्धर्व व मनुष्यों को चित्रांकित किया था। कालीदास के अभिज्ञान–शाकुन्तलम में अनसूइया को इतिहास का आता ज्ञाता माना गया है। लेकिन शूद्र कन्याओं के अध्ययन के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। उनके अध्ययन करने के प्रमाण गुप्त काल में नहीं मिलते । साधारणतः प्राचीन काल से ही अनके उपनयन, अध्ययन आदि वर्जित थे, जिसका प्रभाव इस समय भी बना रहा। समय के साथ समाज में बढ़ती गयी दोष–प्रथाओं, बाल–विवाहों व अन्य परिस्थितियों के कारण नारी शिक्षा में निरन्तर ह्रास होता गया।

नारियों का सम्पति में अधिकार :

हिन्दू समाज में स्त्री का सम्पत्ति–विषयक अधिकार स्वीकार किया गया है। गुप्तकाल में नारियों की सम्पत्ति विषयक अधिकार के बारे में विभिन्न स्मृतियों में विस्तृत वर्णन किया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति में निरूपित मान्यताएँ महत्वपूर्ण है। उन्होंने पुत्र के अभाव में पुरूष की सम्पत्ति पर उनकी पत्नी का सर्वप्रथम अधिकार माना है और उसके बाद उसकी कन्याओं का। बृहस्पति और नारद ने भी कहा है कि कन्या भी पुत्र के समान संतान होती है, अतः पुत्र के अभाव में उसका सम्पत्ति पर अधिकार होना चाहिए। विधवा नारी का पुत्र के अभाव में सम्पत्ति पर अधिकार होने का वर्णन दायभाय और मिताक्षरा में मिलता है। फिर भी विधवा नारी का जीवन कठोरता और निर्ममता पर आधारित था। इसलिए उदार विचारकों ने उसके सम्पत्ति–विषयक अधिकार को स्वीकार किया है।

स्त्री धन :–

जिस पर स्त्रियों का पूर्ण अधिकार होता है, वही स्त्री धन कहलाता है। वैवाहिक अग्नि के सम्मुख जो कुछ कन्या को दिया जाता है, जो कन्या के पति गृह जाते समय मिलता है, जो माता–पिता और भाई से स्नेहवश मिलता है वही स्त्री धन है। विवाह के समय मिला धन, अधिवन्दन के निमित्त मिला हुआ धन विवाह के बाद सास–ससुर आदि से पद्वन्दनादि में स्त्री को जो धन प्राप्त होता था वही स्त्री धन होता था।

पितृमातृ भ्रात् दत्तमध्यान्युपागतम।
अधिवेदनिका धन्चं स्त्रीधनं परिकाीर्तितम्।।
मिताक्षरा, याज्ञवल्क्य (2,143–44)

दहेज में प्राप्त धन पर स्त्री का पूरा अधिकार होता था, इस धन का उपयोग पति को आपातकाल में ही करना चाहिए। माता की सम्पत्ति का अधिकारी पुत्र एवं पुत्री जीवित रहने पर होते थे। अधिकांशतः माताएँ अपना धन अपनी कन्याओं को विवाह में दे देती थी।

विवाह :–

विवाह एक सर्वव्यापी एवम् सार्वभौम संस्था है, जो सभी समाजों में विद्यमान है। भारतीय समाज में विवाह मात्र एक शारीरिक सम्बंध का प्रयोजन न बनकर सन्तानोपत्ति का धर्मगत आधार बना। गुप्तकाल में भी विवाह धर्मगत बना रहा। केवल पुरुष महत्वपूर्ण नहीं वह अपूर्ण है, स्त्री, स्वदेह तथा सन्तान ये तीनों मिलकर ही पुरुष पूर्ण होता है। लेकिन बाहरी आक्रमण और पुरूषों की शक्ति में वृद्धि के कारण बाल–विवाह प्रथा का आरम्भ हुआ। जिसके कारण नारी की धार्मिक स्थिति और शिक्षा में ह्रास आया और इस तरह से गुप्तकाल में नारियों के अधिकार और शक्ति में कमी आयी। इस प्रकार से गुप्तकाल में नारियों के धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं वैयक्तिक अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगाया गया। जन्म से मृत्यु तक वह पुरूष के नियंत्रण में रखने के लिए निर्देशित की गई, यद्यपि ये बन्धन उसकी पवित्रता और सुरक्षा के लिए थे। पिता के लिए कन्या एक समस्या थी और पुत्र के आगमन का स्वागत होने लगा। अतः गुप्तकाल में नारी की स्थिति में ह्रास हुआ। पुत्र को स्वर्ग प्राप्ति का साधन माना जाने लगां कालिदास के अनुसार,

पुत्रं बिना गर्तिनास्ति, स्वर्गे नैव च नैव च।   (रघुवंशम)
गुप्तकालिन समाज में स्त्रियों की दशा में गिरावट का पता चलता है।

विधवा विवाह :–

प्राचीन काल की स्मृतियों में प्रतिपादित विवाह सम्बन्धी नियम वस्तुतः इस काल में भी अपरिवर्तित रहे। लेकिन विधवा–विवाह को मान्यता दी जाने लगी। विधवाओं के पुनर्विवाह को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था, किन्तु मनु और अन्य लेखकों को समाज में इसका प्रचलन स्वीकार करना पड़ा। मनु ने लिखा है कि संतान की इच्छा रखने वाली विधवा मृत पति के भाई अथवा सहपिण्ड से गमन कर सकती है। समकालीन कवि कालीदास ने सती धर्म को अनुकूल मानने के बाबजूद भी समाज में विधवाओं का अस्तित्व स्वीकार किया है।

कन्या विवाह के समय केवल सघवाएँ ही वधू का प्रसाधन कर सकती थी, विधवाओं का वहाँ जाना अमान्य था। विधवा विवाह सर्वथा अमान्य नहीं था। चन्द्रगुप्त द्वितीय को ज्येष्ठ भ्राता रामगुप्त की विधवा ध्रुवस्वामिनी से विवाह होने का प्रमाण गुप्त कालीन साहित्य देवी–चन्द्रगुप्तम् में मिलता है।

इस परम्परा का जो भी इतिहास रहा हो, इस रचना के लेखक के काल में जो छठी सदी का अवसान काल था, ऐसे विवाहों को

स्पष्टतया सामान्य नहीं माना जाता था। कात्यायन ने विधवा को दूसरा पति ले लेने का उल्लेख किया है, और ऐसे पुत्र को पिता के धन में भाग पाने की भी चर्चा की है। जिसकी माँ ने अपने क्लिव पति को छोड़कर दूसरा पति कर लिया है।

पुनर्भू शब्द यानी विधवा का पुनर्विवाह वात्स्यायन के कामसूत्र से स्पष्ट होता है, जो संभवतया गुप्तकाल से सम्बन्धित है। पुत्र सुख के लिए विधवा के द्वारा किया गया विवाह पुनर्भू या पुनर्विवाह कहलाता था।

उक्त तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि विधवा–विवाह कतिपय अनिवार्य परिस्थितियों में एक पवित्र, महत्वपूर्ण, अपेक्षित संस्कार माना गया था लेकिन यह सर्वथ निन्दनीय विगर्हित और त्याज्य समझा जाता था।

नियोग :

अपने मृत पति के भाई या रक्त सम्बन्धी से किसी सन्तानहीन विधवा का सन्तान प्राप्ति हेतु विवाह करना। यदि पति संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हो या उसकी मृत्यु हो गई हो या वह चिरकाल के लिए विदेश चला गया हो या उसका कोई पता न हो, तो ऐसी दशाओं में स्त्री को अनुमति थी कि वह अपने देवर से या पति के सगोत्र किसी अन्य निकट सम्बन्धी से संतान उत्पत्ति के प्रयोजन से नियोग करे, लेकिन यह कामवासना की शांति के लिए न हो। सम्भोग की दृष्टि से किया गया नियोग निन्दनीय था। महाभारत में नियोग प्रथा को पुत्र प्राप्ति के लिए धर्म–सम्मत माना गया है। घृतराष्ट्र और पाण्डु का जन्म व्यास और विचित्र वीर्य की विधवा से नियोग का परिणाम था।

पति के जीवित रहते हुए उसकी सहमति के बिना नियोग करना महापाप है, और उसकी आज्ञा होने पर नियोग नहीं करना भी महापाप है। नियोग द्वारा अधिक से अधिक तीन बच्चे पैदा किया जा सके, ऐसी व्यवस्था की गयी थी। नियोग की प्रथा भारत में चिरकाल तक नहीं रही।

पर्दा प्रथा :

महाकाव्यों के युग में पर्दा प्रथा का प्रारम्भ हो गया था। राज–परिवारों और अभिजात वर्ग की स्त्रियाँ सम्मान और गरिमा के लिए अवगुठंन डाल लिया करती थी, ताकि लोगों की दृष्टि उस पर न पड़े।

गुप्तकालीन स्त्रियाँ यद्यपि स्वतंत्र जीवन जीती थी, फिर भी उनकी कुछ गति–विधियाँ थी। स्त्रियाँ बन्धनमय थी, स्त्रियाँ बिना पर्दा किये धूम–फिर सकती थी, परन्तु अजनवी व्यक्तियों से अनर्थक वार्तालाप करने का अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं था।

न पर पुरूषमनिमाषित अन्यत्र वणि व्रजित वैधेम्यः।
(अपरार्क की टीका, याज्ञ वल्क्य स्मृति)
विधवाओं पर कुछ सामाजिक बन्धन थे। ऐसी स्त्रियाँ अकेले बाहर नहीं निकलती थी।
क्रीड़ा शरीर संस्कारं, समाजोत्सवदर्शन, हास्यं पर गृहे यानं त्यजेत्प्रोयिशतभर्तृम्।।
(याज्ञवल्क्य 1.84)

गुप्तकाल में पर्दे का रूप अनजाना था, यद्यपि घर में स्त्रियों के रहने के स्थान पुरूषें से अलग था। रजवाड़ों में जहाँ वह रहती थी महल के उस भाग को अन्तःपुर कहते थे। स्त्रियाँ जब अपने पति के साथ निकलती थी तब लाज के उपचार से उनसे आशा भी की जाती थी कि वे अपना मुँह ढ़ँक लेगी। कालीदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कहा है जब शकुन्तला राजा दुष्यंत के दरबार में गई तो उसने अपने मुख को अवगुंठन से ढ़ँक लिया।

मृच्छकटिकम् में जैसे ही बसन्त सेना (जो एक वेश्या थी) ने वधू का पद प्राप्त किया, तब अपना मुंह ढ़ँक लेती है। गुप्तकाल की कला–कृतियों में नारी–प्रतिभाओं के ऊपर किसी प्रकार का पर्दे का आवरण नहीं है। गुप्त युग की स्त्री प्रतिमाओं तथा अजन्ता एलोरा साँची, भरहुत आदि के चित्रों और मूर्तियों में अवगुंठन का कहीं भी चित्रण नहीं है। महाकवि माघ के शिशुपाल वद्य से भी पर्दे प्रथा की सत्ता इंगित होती है। उसमें उल्लिखित है कि जब नारी के मुख पर से पर्दा खिसक जाता है तो, क्षण भर के लिए मुख की श्री (छवि) दिख जाती है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि गुप्तकालीन समय में पूर्णतः नही ंतो सामान्य तौर पर पर्दा प्रथा प्रचलित था। खासकर बड़े परिवारों में और सामान्य परिवारों में नहीं। पर्दा प्रथा नवीं व आठवीं सदी तक अवश्य प्रचलित रहा।

सती प्रथा :

सती का शाब्दिक अर्थ अमर या सत्य पर स्थिर रहने वाली है जो पति–पत्नी का अटूट और अविच्छेप सम्बन्ध को व्यक्त करता है। धर्म के प्रति एक निष्ठ होकर अपनी उज्जवल चरित्र की कीर्ति द्वारा संसार में अमर होने वाली सती कहलाती थी। मृत पति के साथ जीवित ही चिता में जलकर प्राण त्यागना इसकी प्रक्रिया थी।

गुप्तकालीन साहित्य –स्मृतियां और काव्यादि में समाज में पति के साथ सती होने का उल्लेख मिलता है। कालीदास ने इस प्रथा का संकेत पति वर्त्मणा पद द्वारा किया है। नर्तकियाँ अपने प्रेमी को सती होने का झूठा आश्वासन दिया करती थी। समकालीन ललित साहित्य में भी सती–प्रथा का उल्लेख मिलता है। वृहत्संहिता सती धर्म की प्रशंसा करती है, पर कादम्बरी और मृच्छकटिकम् ने उसकी निन्दा की है।

सती–प्रथा के सम्बन्ध में भी गुप्तकालीन अभिलेखीय प्रमाण मिले हैं। सती–प्रथा का प्रथम महत्वपूर्ण साक्षी 510 ई. का ऐरण शिलालेख है जिसमें गोपराज नामक सेनापति की पत्नी के सती होने का वर्णन है। दूसरी ओर चन्द्रगुप्त द्वितीय की विधवा पुत्री प्रभावती गुप्त ने

लम्बे समय तक अपने पुत्र की संरक्षिका के रूप में शासन–भार संभाला। जन साधारण में सती होने का प्रचलन नहीं था। इस तरह से हम पाते है कि सती प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से लेकर गुप्तकाल तक किसी न किसी रूप में अवश्य प्रचलित थी।

गणिका :

प्राचीन काल में गणिका का समाज में स्थान था, गायन, वादन और संगीत के प्रेमी उससे आकृश्ट रहते थे। गुप्तकाल में भी अभिसारिकाओं अथवा नर्त्तकी स्त्रियों का अस्तित्व या उनका उपयोग जन्म आदि अवसरों, मंदिरों में नाचने–गाने के लिए होता था। महाकवि कालिदास ने उज्जयिनी के महाकाल के मंदिर में चबरधारिणी नर्त्तकियों के नृत्य का स्पष्ट वर्णन किया है।

यह यद्यपि वेश्याएँ ही होती थी, परंतु ईश्वर की आराधना वादन, गायन एवं नर्त्तन आदि भक्ति भाव से करती थी। मंदिर के लिए सुन्दर–सुन्दर कन्याएँ खरीदी जाती थी। जिन माताओं को सन्तान नहीं होती थी वे अपना प्रथम बच्चा मंदिर में समर्पित करने की मनौति माँगती थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग भी अपने यात्रा वृतान्त में सिन्ध के एक सूर्य मन्दिर में नियुक्त नर्त्तकियों का उल्लेख करता है।

गणिकाओं की कथाओं में उनकी मानवता, सह्रदयता, कोमलता के साथ ही उनकी क्रुरता, धूर्तता, क्षुद्रता, धनलोलुपता और विश्वासघात का पता चलता है। परवर्ती साहित्य में इनके कई नाम प्रचलित हुए – नर्तकी, रूपाजीवा, वेश्या, वारांगना आदि।

निष्कषर्त :

गुप्तकाल में नर्तकियों की स्थिति उच्च एवं सम्मानित थी। गणिकाओं का उपयोग गुप्तचरों के रूप में किये जाने से इनका राजनीतिक महत्व भी कम नहीं था।

अंततः उपर्युक्त विवेचन से यह पता चलता है कि वैदिक काल की अपेक्षा गुप्तकाल में नारियों की स्थिति में सामान्य तौर पर गिरावट आने लगी। इस काल में नारियों की परतन्त्रता और पराधीनता लगातार बढ़ती गयी।

सन्दर्भ सूची :–

1.शतपथ ब्राहमण 5,2,1,10
2.मनु, 9,45
3.डॉ. पाण्डेय – भारतवर्ष का सामाजिक इतिहास पृ.–100
4.मत्स्य पुराण – 15 / 5–6
5.विष्णु पुराण 5,32
6.अभिज्ञान शाकुन्तलम्
7.याज्ञवल्क्य 2, 135–6
8.मिताक्षरा
9.झा एवं श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास पृ. 313–314
10.छेवी चन्द्र गुप्तम
11.वात्स्पायन – कामसूत्र 184 2, 39–59
12.बी. के अग्निहोत्री – भारतीय इतिहास ृ. अ –473
13. गरूड़पुराण 1:105–42
14.ज्ञशूद्रक – मृच्छकटिकम् अंक – 10
15.वेनसांग का यात्रा वृतान्त – 2, 254

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net